6/7/20 - विषय - हिन्दी नाम - डॉ० साधना कुमारी

Time - 10.30 to 11.20

Lecture - I

मलिक मुहम्मद जायसी का कवि परिचय

मलिक मुहम्मद जायसी (1467 - 1542) हिन्दी साहित्य के भक्ति काल की निर्गुण प्रेमाश्रयी धारा के कवि हैं। वे अत्यंत उच्चकोटि के सरल और उदार सूफी महात्मा थे। जायसी मलिक वंश के थे। मिश्र में सेनापति या प्रधानमंत्री को मलिक कहते थे। दिल्ली सल्तनत में खिलजी वंश राज्यकाल में अलाउद्दीन खिलजी ने अपने चाचा को मरवाने के लिए बहुत से मलिकों को नियुक्त किया था जिसके कारण यह नाम उस काल से काफी प्रचलित हो गया था। ईरान में मलिक जमींदार को कहा जाता था व इनके पूर्वज वहां के निगलाम प्रान्त से आगे से और वहीं से उनके पूर्वजों की पदवी मलिक थी। मलिक मुहम्मद जायसी के वंशज अशरफी खानदान के चेले थे और मलिक कहलाते थे। फिरोज शह तुगलक के अनुसार बारह हजार सेना के सिपहदार को मलिक कहा जाता था। जायसी ने शेख बुरहान और सैयद अशरफ को अपने गुरुओं के रूप में उल्लेख

गयी थीं। ये काले और कुरूप तो थे ही, एक बार बादशाह शेरशाह इन्हें देखकर हँसने लगे तब जायसी ने कहा — 'मोहिका हँसेसि कि कोहरहिं' इस बार बादशाह बहुत लज्जित हुए। जायसी एक गृहस्थ के रूप में भी रहे। इनका विवाह भी हुआ था तथा पुत्र भी थे परन्तु पुत्रों की असामयिक मृत्यु से इनके हृदय में वैराग्य का जन्म हुआ। इनके चार घनिष्ठ मित्र थे — युसुफ मलिक, सालार कादिम, सलोने मियाँ और बड़े शेख। बाद में जायसी अमेठी में रहने लगे थे वहीं सन् 1542 ई० में इनकी मृत्यु हुई थी। कहा जाता है कि जायसी के आशीर्वाद से अमेठी नरेश के यहाँ पुत्र का जन्म हुआ। तब से उनका अमेठी के राजवंश में बड़ा सम्मान था। प्रचलित है कि जीवन के अंतिम दिनों में ये अमेठी से कुछ दूर मँगरा नाम के वन में साधना किया करते थे। वहीं किसी के द्वारा शेर की आवाज के धोखे में इन्हें गोली मार देने से इनका देहान्त हो गया था।

रचनाएँ — 'पद्मावत' 'अखरावट', 'आखिरी कलाम', 'चित्ररेखा' आदि जायसी की प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। इनमें 'पद्मावत' सर्वोत्कृष्ट है और वही जायसी की अक्षय कीर्ति का आधार है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार इस ग्रंथ का प्रारंभ 1520 ई० में हुआ था और समाप्ति 1540 ई० में। जायसी ने 'पदमावत' में चित्तौड़ के राजा रत्नसेन और सिंहलद्वीप की राजकुमारी पद्मावती की प्रेमकथा का अत्यंत मार्मिक वर्णन किया है। एक ओर इतिहास और कल्पना के सुंदर संयोग से यह एक उत्कृष्ट प्रेम-गाथा है और दूसरी ओर इसमें आध्यात्मिक प्रेम की भी अत्यंत भावमयी अभिव्यंजना है। 'अखरावट' में वर्णमाला के एक-एक अक्षर को लेकर दर्शन एवं सिद्धान्त संबंधी बातें चौपाइयों में कही गयी हैं। इसमें